Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2026 = 8.727
https://www.srjis.com/issues_data/293
Peer Reviewed & Refereed Journal, JULY-AUG 2026, Vol- 15/96
https://doi.org/10.5281/zenodo.22505263

दलितों के सामाजिक, आर्थिक जागरण में बाबू जगजीवन राम की भूमिका

प्रो0 चन्द्र प्रकाश सिंह
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

Paper Received On: 20 JULY 2026
Peer Reviewed On: 24 AUG 2026
Published On: 01 SEPT 2026

Abstract

भारतीय समाज का इतिहास सामाजिक विविधता के साथ–साथ गहरी सामाजिक असमानताओं का भी इतिहास रहा है। जाति–व्यवस्था ने लंबे समय तक समाज के एक बड़े वर्ग को शिक्षा, सम्मान, संपत्ति, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और आर्थिक अवसरों से वंचित रखा। विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और तथाकथित अस्पृश्य वर्गों को सामाजिक बहिष्कार, आर्थिक शोषण तथा राजनीतिक उपेक्षा का सामना करना पड़ा। आधुनिक भारत में इन वर्गों के जागरण और अधिकारों की चेतना के निर्माण में अनेक समाज–सुधारकों और राजनीतिक नेताओं का योगदान रहा। डॉ. भीमराव अम्बेडकर, महात्मा गांधी, ज्योतिबा फुले आदि के साथ बाबू जगजीवन राम का नाम भी इस संघर्ष की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में लिया जाता है। बाबू जगजीवन राम केवल दलित नेता नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता सेनानी, समाज–सुधारक, कुशल प्रशासक, श्रमिक हितों के समर्थक और लंबे समय तक भारतीय राजनीति में सक्रिय राष्ट्रीय नेता रहे। उन्होंने दलितों के प्रश्न को केवल सामाजिक भेदभाव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, श्रम–अधिकार, आर्थिक अवसर और संवैधानिक संरक्षण से जोड़ा। उनका विश्वास था कि दलितों की वास्तविक मुक्ति तभी संभव है जब वे शिक्षा प्राप्त करें, राजनीतिक रूप से जागरूक हों, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनें और समाज में समान अधिकार के साथ भागीदारी करें। भारत सरकार के बाबू जगजीवन राम राष्ट्रीय फाउंडेशन के अनसु ार, उन्होंने सामाजिक न्याय और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए अपने विद्यार्थी जीवन से ही संघर्ष प्रारम्भ किया था।[1]

उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने दलित जागरण को राष्ट्रीय आंदोलन और लोकतांत्रिक राजनीति से जोड़ा। वे सामाजिक परिवर्तन के लिए संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक उपायों के समर्थक थे। उनके विचार में दलितों को राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा से अलग करने के बजाय समान अधिकारों के साथ उसमें भागीदार बनाया जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने दलित आंदोलन को एक विशिष्ट राजनीतिक दिशा प्रदान की।

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कूट शब्द : श्रम–अधिकार, आर्थिक अवसर, कुशल प्रशासक, सामाजिक न्याय, शिक्षा, सम्मान, सामाजिक बहिष्कार

प्रारंभिक जीवन

बाबू जगजीवन राम का जन्म 5 अप्रैल 1908 को बिहार के शाहाबाद जिले के चाँदवा गाँव में हुआ था। उनका जन्म ऐसे सामाजिक परिवेश में हुआ जहाँ जातिगत भेदभाव सामाजिक जीवन की सामान्य वास्तविकता थी।[2] उन्होंने आरा टाउन स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तथा बाद में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से इंटर साइंस और कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की।

विद्यार्थी जीवन में ही उन्हें जातिगत भेदभाव का अनुभव हुआ। इसी अनुभव ने उनके भीतर सामाजिक समानता की भावना को मजबूत किया। किशोरावस्था में उन्होंने आरा के विद्यालय में दलित विद्यार्थियों के लिए अलग घड़ा रखे जाने की प्रथा का विरोध किया और विद्यालय प्रशासन को उसे समाप्त करने के लिए बाध्य किया। यह घटना उनके सामाजिक जागरण की प्रारभिक अभिव्यक्ति थी।[3] इस घटना का महत्व इसलिए अधिक है कि जगजीवन राम ने जातिगत भेदभाव का केवल व्यक्तिगत रूप से विरोध नहीं किया, बल्कि उसे सार्वजनिक समस्या बनाया। उनके लिए सामाजिक सम्मान व्यक्ति की जन्मजात पहचान नहीं, बल्कि उसके मानव होने के अधिकार से जुड़ा हुआ था।

जगजीवन राम ने दलित समाज के संगठन को सामाजिक जागरण का महत्वपूर्ण माध्यम माना। कलकत्ता में विद्यार्थी जीवन के दौरान उन्होंने रविदास सम्मेलनों का आयोजन किया और गुरु रविदास की जयंती को सामाजिक चेतना के अवसर के रूप में विकसित किया। 1934 में उन्होंने कलकत्ता में अखिल भारतीय रविदास महासभा तथा बाद में दलित वर्गों के राजनीतिक संगठन को मजबूत करने की दिशा में कार्य किया।[4] उनका संगठनात्मक दृष्टिकोण केवल धार्मिक या सांस्कृतिक पहचान तक सीमित नहीं था। वे दलित समाज में आत्मसम्मान और राजनीतिक चेतना विकसित करना चाहते थे। 1935 में उन्होंने दलित वर्गों के लिए राजनीतिक अधिकारों और मताधिकार की माँग को भी उठाया। हेमंड आयोग के सामने उनकी राजनीतिक भागीदारी इस बात का प्रमाण थी कि वे सामाजिक सुधार को राजनीतिक प्रतिनिधित्व से अलग नहीं मानते थे।[5]

इस प्रकार जगजीवन राम ने दलित जागरण के तीन महत्वपूर्ण आधार विकसित किए– संगठन, शिक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व। उनके अनुसार जिस समाज के पास राजनीतिक आवाज नहीं होती, उसके सामाजिक और आर्थिक हित भी सुरक्षित नहीं रह सकते।

दलितों में राजनीतिक चेतना का जागरण

बाबू जगजीवन राम का सबसे महत्वपूर्ण योगदान दलितों में राजनीतिक चेतना का विकास था। वे मानते थे कि दलित समाज को केवल दया या सुधारवादी दृष्टिकोण की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसे राजनीतिक शक्ति और प्रतिनिधित्व चाहिए। इसी उद्देश्य से उन्होंने दलित वर्गों को संगठित किया और चुनावी राजनीति में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

1936–37 में वे बिहार विधान परिषद के सदस्य बने तथा उसी वर्ष बिहार विधान सभा के लिए निर्विरोध चुने गए। उनकी राजनीतिक सफलता का प्रभाव केवल उनके व्यक्तिगत राजनीतिक जीवन तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने दलित वर्ग के अनेक प्रतिनिधियों को राजनीतिक प्रक्रिया में

लाने का प्रयास किया।[6] उनका यह दृष्टिकोण उस समय अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बिना सामाजिक सुधारों को स्थायी रूप देना कठिन था। संविधान सभा में उनकी भागीदारी ने दलितों के अधिकारों को राष्ट्रीय संवैधानिक विमर्श से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्र भारत में दलितों के सामाजिक जागरण का सबसे महत्वपूर्ण आधार संविधान बना। बाबू जगजीवन राम संविधान सभा के महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक थे। वे सामाजिक समानता और राजनीतिक अधिकारों को लोकतांत्रिक भारत की मूल आवश्यकता मानते थे। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 द्वारा अस्पृश्यता का उन्मूलन किया गया। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा सरकारी सेवाओं में विशेष प्रावधानों की व्यवस्था ने दलितों के लिए सामाजिक और राजनीतिक उन्नति के रास्ते खोले। बाबू जगजीवन राम इन संवैधानिक प्रयासों के समर्थक थे। बाबू जगजीवन राम राष्ट्रीय फाउंडेशन के अनुसार, उन्होंने संविधान सभा में अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सरकारी सेवाओं में आरक्षण संबंधी प्रावधानों को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाई।[7] यह व्यवस्था दलित जागरण की दृष्टि से ऐतिहासिक थी। सदियों से सामाजिक रूप से वंचित वर्गों को पहली बार आधुनिक राज्य की संस्थाओं में प्रतिनिधित्व और अवसर प्राप्त करने का संवैधानिक आधार मिला।

अस्पृश्यता उन्मूलन में भूमिका

जगजीवन राम अस्पृश्यता को केवल सामाजिक बुराई नहीं, बल्कि लोकतंत्र और मानव गरिमा और मानव अस्मिता के विरुद्ध मानते थे। वे चाहते थे कि दलितों को सार्वजनिक जीवन में समानता और बराबरी का अधिकार मिले। उनके प्रयासों का संबंध अस्पृश्यता–विरोधी कानूनों और सामाजिक सुधारों से भी रहा। 1955 का अस्पृश्यता संबंधी कानून बाद में 1976 में संशोधित होकर सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 के रूप में जाना गया। जगजीवन राम इस दिशा में प्रयास करने वाले महत्वपूर्ण राजनीतिक समर्थकों में थे।[8] उनकी दृष्टि में कानून तो आवश्यक था, लेकिन केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं था। समाज की मानसिकता में परिवर्तन भी आवश्यक था। इसलिए वे शिक्षा, सामाजिक संपर्क और राजनीतिक भागीदारी को सामाजिक परिवर्तन का आधार मानते थे।

रेलवे मंत्री के रूप में उन्होंने रेलवे स्टेशनों पर बाल्मीकि समदुाय के लोगों को पेयजल उपलब्ध कराने से संबंधित रोजगार देने जैसे कदमों को भी सामाजिक सम्मान से जोड़ा। इस प्रकार उन्होंने उन व्यवसायों से जुड़े लागेों के सम्मान का प्रश्न उठाया जिन्हें जाति–व्यवस्था में निम्न समझा जाता था।[9] इससे इस समुदाय के लोगों के आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ।

बाबू जगजीवन राम शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी और महत्वपूर्ण साधन मानते थे। उनका अपना जीवन इसका उदाहरण था। जातिगत भेदभाव के बावजूद उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और राष्ट्रीय राजनीति में सर्वोच्च पदों तक पहुँचे। उनका विचार था कि यदि दलित बच्चे शिक्षा से वंचित रहेंगे तो वे सामाजिक और आर्थिक प्रतिस्पर्धा में बराबरी नहीं कर पाएँगे। इसलिए उन्होंने दलित विद्यार्थियों के लिए विद्यालय, छात्रावास और छात्रवृत्ति जैसी कई और सुविधाओं के विस्तार पर जोर दिया।

बाबू जगजीवन राम राष्ट्रीय फाउंडेशन के अनुसार, दलित–बहुल क्षेत्रों में विद्यालय एवं छात्रावास स्थापित करने तथा विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था करने की दिशा में प्रयास किए।[10] ताकि उन्हें रहने और भोजन सम्बन्धी मूलभूत आवश्यकता की दिक्कत न हो। शिक्षा के इस अभियान का दूरगामी प्रभाव पड़ा। शिक्षा प्राप्त करने वाली नई दलित पीढ़ी सरकारी सेवाओं, राजनीति, प्रशासन, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में प्रवेश करने लगी। इससे दलित समाज में आत्मविश्वास और सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता बढ़ी।

दलितों के आर्थिक जागरण में बाबू जगजीवन राम की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत में दलित समुदाय का बड़ा हिस्सा कृषि मजदूरी, असंगठित श्रम और निम्न वेतन वाले व्यवसायों से जुड़ा हुआ था। इसलिए सामाजिक समानता के साथ आर्थिक सुरक्षा भी आवश्यक थी।

1946 में अंतरिम सरकार में श्रम मंत्री बनने के बाद जगजीवन राम ने श्रमिकों के हितों के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनके कार्यकाल मं` श्रम कल्याण संबंधी कानूनों को मजबूती मिली। इनमें औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 तथा भविष्य निधि अधिनियम 1952 जैसे कानून विशेष महत्व रखते हैं।[11] इन कानूनों का लाभ केवल दलितों को ही नहीं, बल्कि पूरे श्रमिक वर्ग को मिला फिर भी इनका दलितों पर विशेष प्रभाव पड़ा क्योंकि दलितों का बड़ा हिस्सा मजदूरी और निम्न आय वाले रोजगारों पर निर्भर था। न्यनू तम मजदूरी का विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण था। स्वयं जगजीवन राम ने संसद में कहा था कि 1948 में न्यूनतम मजदूरी कानून बनान` के पीछे कृषि मजदूरों की स्थिति भी एक प्रमुख चिंता का विषय थी।[12] इस प्रकार उन्होंने दलित प्रश्न को श्रम प्रश्न से जोड़ा। यह आर्थिक जागरण का महत्वपूर्ण चरण था क्योंकि सामाजिक सम्मान के साथ न्यूनतम मजदूरी, रोजगार सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा भी आवश्यक थी।

कृषि मजदूरों के हितों की रक्षा

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में दलित समुदाय लंबे समय तक भूमिहीन मजदूरों के रूप में कार्य करता रहा। भूमि पर स्वामित्व का अभाव और कम मजदूरी उनकी आर्थिक निर्भरता का प्रमखु कारण था। जगजीवन राम ने कृषि मजदूरों की समस्या को राष्ट्रीय आर्थिक नीति का हिस्सा बनाने का प्रयास किया। संसद में उन्होंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि सरकारी योजनाओं का लाभ कई बार बड़े और प्रभावशाली किसानों तक सीमित रह जाता है तथा छोटे किसानों, कारीगरों और भूमिहीन मजदूरों तक पर्याप्त रूप से नहीं पहुँचता।[13] यह दृष्टिकोण गरीबों और श्रमिकों के प्रति उनकी आर्थिक सोच को स्पष्ट करता है। वे केवल कानून बनाने के पक्षधर नहीं थे, बल्कि योजनाओं के वास्तविक लाभार्थियों तक पहुँचने को आवश्यक मानते थे। दलित आर्थिक जागरण की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि ग्रामीण गरीबों के आर्थिक हितों की रक्षा के बिना सामाजिक समानता अधूरी रहती।

दलितों के आर्थिक उत्थान में सरकारी रोजगार का विशेष महत्व था। सदियों से सामाजिक बहिष्कार के कारण दलितों की प्रशासनिक और शैक्षिक संस्थाओं में भागीदारी बहुत कम थी। आरक्षण ने इस स्थिति को बदलने का अवसर दिया। जगजीवन राम आरक्षण को सामाजिक न्याय का बहुत महत्वपूर्ण साधन मानते थे। उन्होंने सरकारी सेवाओं और राजनीतिक संस्थाओं में अनुसूचित जातियों के प्रतिनिधित्व की आवश्यकता का समर्थन किया। उनके राजनीतिक प्रभाव के कारण आरक्षण की नीतियों के क्रियान्वयन पर भी ध्यान दिया गया। बाबू जगजीवन राम

फाउंडेशन के अनुसार, 1957 में रेलवे मंत्री रहते हुए उन्होंने पदोन्नति में आरक्षण की व्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लिया, जिसका विरोध भी हुआ और मामला न्यायालय तक गया।[14] आरक्षण के माध्यम से दलित समाज के एक वर्ग को सरकारी सेवाओं में प्रवेश मिला। इससे केवल राजेगार ही नहीं मिला, बल्कि शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक जागरूकता भी बढ़ी। धीरे–धीरे एक शिक्षित दलित मध्यवर्ग का निर्माण हुआ, जिसने आगे चलकर दलित समाज के नेतृत्व को मजबूत किया।

आर्थिक विकास और हरित क्रांति

जगजीवन राम का आर्थिक योगदान श्रम क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था। वे खाद्य एवं कृषि मंत्री भी रहे। 1967 के गंभीर खाद्य संकट और सूखे की परिस्थितियों में उन्होंने कृषि उत्पादन बढ़ाने की दिशा में कार्य किया। उनके कार्यकाल को हरित क्रांति के विस्तार और खाद्यान्न आत्म निर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण माना जाता है।[15]

कृषि उत्पादन में वृद्धि का संबंध दलितों से भी था क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में दलित मजदूरों और छोटे किसानों की बड़ी संख्या थी। हालांकि हरित क्रांति के लाभों का वितरण समान नहीं था, फिर भी कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा में वृद्धि ने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान की। जगजीवन राम की आर्थिक दृष्टि में राष्ट्रीय विकास और कमजोर वर्गों का विकास परस्पर जुड़े हुए थे। उनका मानना था कि यदि देश की अर्थव्यवस्था आगे बढ़ती है तो उसका लाभ समाज के वंचित वर्गों तक भी पहुँचना चाहिए।

सामाजिक सम्मान और आत्मसम्मान की भावना

दलित जागरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आत्मसम्मान से जुड़ा है। बाबू जगजीवन राम ने दलित समाज को यह विश्वास दिलाया कि सामाजिक पिछड़ापन जन्मजात नियति नहीं है। बल्कि शिक्षा, संगठन, राजनीतिक भागीदारी और आर्थिक अवसरों के माध्यम से दलित समाज अपनी स्थिति बदल सकता है। उनकी राजनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि वे दलितों को राष्ट्रीय समाज की मुख्यधारा से अलग करने के बजाय उसमें समान भागीदारी के पक्षधर थे। उनके विचार में दलितों को समान अधिकारों और समान दायित्वों के आधार पर सामाजिक जीवन में भाग लेना चाहिए। उनके संसद संबंधी प्रोफाइल में भी उनके विचारों को सामाजिक रूप से परस्पर निर्भर तथा समान अधिकारों वाले समाज की स्थापना से जोड़ा गया है।[16] यही कारण है कि उन्होंने सामाजिक संघर्ष को लोकतांत्रिक राजनीति और संवैधानिक संस्थाओं के माध्यम से आगे बढ़ाया।

डॉ. अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम : दृष्टिकोण की तुलना

दलित जागरण के इतिहास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर और बाबू जगजीवन राम दोनों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन दोनों की राजनीतिक रणनीतियों में अंतर था। डॉ. अम्बेडकर ने जाति–व्यवस्था की मलू संरचना की तीखी आलोचना की और स्वतंत्र राजनीतिक संगठन, सामाजिक क्रांति तथा अंततः बौद्ध धर्म ग्रहण करने जैसे कदम उठाए। इसके विपरीत जगजीवन राम ने मुख्यतः लोकतांत्रिक संस्थाओं और राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था के भीतर रहकर दलित अधिकारों के विस्तार पर जोर दिया। जगजीवन राम दलितों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से अलग करने के पक्ष में नहीं थे। उनके अनुसार सामाजिक समानता प्राप्त करन` के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओ में सक्रिय भागीदारी आवश्यक थी। उनके इस दृष्टिकोण को उनके संगठनात्मक और संसदीय जीवन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[17]

दोनों नेताओं के रास्ते अलग होने के बावजूद उनका मूल लक्ष्य समान था– दलितों को सम्मान, समानता, स्वतत्रं ता और अवसर प्राप्त कराना। इसलिए भारतीय दलित आंदोलन के इतिहास में अम्बेडकर और जगजीवन राम की भूमिकाओं को परस्पर विरोधी के बजाय अलग–अलग रणनीतियों के रूप में देखना अधिक उचित है।

जगजीवन राम का विश्वास लोकतंत्र में था। वे मानते थे कि लोकतत्रं केवल मतदान की व्यवस्था नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में काम करने वाली व्यवस्था होना चाहिए। उन्होंने लंबे समय तक संसद में रहकर दलितों और कमजोर वर्गों की समस्याओं को राष्ट्रीय नीति का विषय बनाया। वे चार दशकों से अधिक समय तक केंद्रीय विधानमडं ल के सदस्य रहे और स्वतंत्र भारत में लंबे समय तक केंद्रीय मंत्री रहे।[18] उनकी लंबी राजनीतिक उपस्थिति का दलित समाज पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ा। एक दलित व्यक्ति का लगातार राष्ट्रीय राजनीति के सर्वोच्च स्तर पर बने रहना स्वयं सामाजिक चेतना का शक्तिशाली प्रतीक था। इससे दलित युवाओं में यह विश्वास पैदा हुआ कि जातिगत पृष्ठभूमि किसी व्यक्ति की उपलब्धियों की सीमा निर्धारित नहीं कर सकती।

सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता

जगजीवन राम का सामाजिक न्याय का विचार राष्ट्रीय एकता से जुड़ा हुआ था। वे मानते थे कि जिस समाज में करोड़ों लोग अपमान और भेदभाव झेल रहे हों, वह वास्तव में मजबूत राष्ट्र नहीं बन सकता। इसलिए वे दलितों की उन्नति को केवल किसी एक समुदाय का प्रश्न नहीं मानते थे। उनका विचार था कि देश की प्रगति और दलितों की प्रगति एक–दूसरे से जुड़ी हुई हैं। उनकी राजनीतिक सोच में सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय विकास परस्पर पूरक थे।[19] यह दृष्टिकोण उन्हें केवल दलित नेता की संकीर्ण पहचान से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय नेता बनाता है।

बाबू जगजीवन राम के प्रयासों का मूल्यांकन

बाबू जगजीवन राम के योगदान का मूल्यांकन कई स्तरों पर किया जा सकता है। **पहला,** उन्होंने दलित समाज में राजनीतिक चेतना पैदा की। उन्होंने मताधिकार, प्रतिनिधित्व और संगठन को सामाजिक मुक्ति का आधार माना। **दूसरा,** उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया। दलित विद्यार्थियों के लिए शिक्षा और छात्रावास जैसी सुविधाओं को बढ़ावा देने का प्रयास किया। **तीसरा,** उन्होंने श्रमिक हितों के लिए कानूनों को मजबूत किया। न्यूनतम मजदूरी, कर्मचारी राज्य बीमा और भविष्य निधि जैसी व्यवस्थाएँ श्रमिक वर्ग के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आईं। **चौथा,** उन्होंने संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं में दलितों के अधिकारों को सुरक्षित करने की दिशा में काम किया। **पाँचवा,** उन्होंने अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध कानूनी तथा सामाजिक संघर्ष को आगे बढ़ाया। उन्होंने स्वयं अपने जीवन से दलित समाज के लिए आत्मविश्वास और सामाजिक गतिशीलता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

फिर भी उनके योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन आवश्यक है। उनकी रणनीति मुख्यतः संवैधानिक और संस्थागत थी। इससे दलितों के एक बड़े वर्ग को शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के अवसर मिले, लेकिन ग्रामीण भारत में भूमि–विहीनता, जातिगत हिंसा, सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकीं। इसलिए उनके प्रयासों को दलित मुक्ति की पूर्ण परिणति के बजाय एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक चरण के रूप में देखना चाहिए। उनकी पुस्तक Caste Challenge in India में जाति–व्यवस्था और उसके

सामाजिक प्रभावों पर उनका अपना चिंतन मिलता है। आधुनिक अध्ययनों में भी इस पुस्तक को उनके जाति–विरोधी विचारों को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है।[20]

बाबू जगजीवन राम का दलित जागरण कार्यक्रम मूलतः बहुआयामी था। उन्होंने सामाजिक सम्मान, शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और आर्थिक सुरक्षा को एक–दूसरे से जोड़कर देखा। उनके प्रयासों को निम्न रूप में समझा जा सकता है–

सामाजिक जागरण – अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव का विरोध। शैक्षिक जागरण – दलित विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के अवसर। राजनीतिक जागरण – मताधिकार, प्रतिनिधित्व और संगठन। आर्थिक जागरण – न्यूनतम मजदूरी, श्रमिक कल्याण और सामाजिक सुरक्षा। संवैधानिक संरक्षण – आरक्षण और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा। आत्मसम्मान –दलित समाज में आत्मविश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना। राष्ट्रीय एकीकरण – दलितों को राष्ट्र की लोकतांत्रिक मुख्यधारा में समान भागीदार बनाना। इन सभी प्रयासों ने मिलकर दलित समाज के आधुनिक जागरण की प्रक्रिया को मजबूत किया।

निष्कर्ष

बाबू जगजीवन राम भारतीय इतिहास में सामाजिक न्याय और दलित सशक्तीकरण के महत्वपूर्ण नायकों में से एक हैं। उन्होंने ऐसे समय में सार्वजनिक जीवन प्रारंभ किया जब जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता व्यापक सामाजिक वास्तविकताएँ थीं। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को उन्होंने सामाजिक संघर्ष की शक्ति में बदला।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने दलित प्रश्न को केवल जातिगत भेदभाव के प्रश्न के रूप में नहीं देखा। उन्होंने इसे शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, रोजगार, मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा, संवैधानिक अधिकार और राष्ट्रीय विकास से जोड़ दिया। इस व्यापक दृष्टिकोण ने दलित जागरण को एक स्थायी राजनीतिक और सामाजिक आधार प्रदान किया। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सामाजिक मुक्ति केवल विरोध से नहीं, बल्कि शिक्षा, संगठन, राजनीतिक भागीदारी और आर्थिक आत्मनिर्भरता से भी संभव है। उन्होंने दलित समाज को लोकतांत्रिक संस्थाओं में भाग लेन` और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने का मार्ग दिखाया।

यदि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान और सामाजिक न्याय की वैचारिक एवं संवैधानिक नींव को मजबूत किया, तो बाबू जगजीवन राम ने लंबे समय तक लोकतांत्रिक राजनीति और शासन के भीतर रहकर उन अधिकारों के व्यावहारिक विस्तार में योगदान दिया। दोनों की कार्य–पद्धतियों में अंतर अवश्य था, लेकिन दलित समाज की गरिमा, समानता और अधिकारों की स्थापना उनका साझा लक्ष्य था। अतः बाबू जगजीवन राम की भूमिका को केवल 'दलित नेता' के रूप में सीमित करना उचित नहीं होगा, बल्कि एक विस्तृत परिपेक्ष्य में देखना होगा। वे सामाजिक न्याय के योद्धा, श्रमिक हितों के समर्थक, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व के पक्षधर और दलित आर्थिक–सामाजिक जागरण के प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं में थे। उनका योगदान आज भी सामाजिक समानता और समावेशी विकास की बहस में प्रासंगिक है।

संदर्भ_ग्रंथ :

01. Babu Jagjivan Ram National Foundation; *Government of India; Babuji's Biography;* Babu Jagjivan Ram

02. मौर्य, डॉ0 ओमप्रकाश (1997); *आधुनिक भारत के निर्माता बाबू जगजीवन राम;* नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, पृ0– 03
03. Kumar, Meira (2005); *Babu Jagjivan Ram: A Biography*; New Delhi, National Book Trust, P- 38
04. Kumar, Meira (2005); *Babu Jagjivan Ram: A Biography*; New Delhi, National Book Trust, P- 54
05. डी.सी. अहिर (1990); *Babu Jagjivan Ram: A Crusader for Social Justice*; New Delhi, B.R. Publishing Corporation, P- 71
06. Parliament of India (Sept 2011); *Journal of Parliamentary Information*
07. Constituent Assembly Debates, Vol. VII; 30 Nov 1948, P- 649-50
08. बाबू जगजीवन राम राष्ट्रीय फाउंडेशन; *Babu Jagjivan Ram: Achivements*; भारत सरकार
09. राम, जगजीवन; कास्ट चैलेंज इन इण्डिया, पृ0-45
10. कुमार, डॉ0 हरिश (2000); *युगपुरूष बाबू जगजीवन राम;* पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ0-30
11. लेबर गजट ऑफ इण्डिया (1949); वाल्यूम-01, पृ0 1553-1556
12. राम, जगजीवन(1951); *जगजीवन राम ऑन लेबर प्राब्लम्स*; दिल्ली, आत्मा राम एण्ड सन्स, पृ0- 96-97
13. जगजीवन राम फाउंडेशन; *बाबू जगजीवन राम : लाईफ एण्ड कन्ट्रीब्यूशन,* नई दिल्ली
14. Government of India; Ministry of Railway, Railway Board से संबंधित आदेश
15. Babu Jagjivan Ram National Foundation; Achievements, खाद्य एवं कृषि मंत्री के रूप में 1967 के सूखे, खाद्य उत्पादन और हरित क्रांति संबंधी विवरण।
16. Ram, Babu Jagjivan ; *Babu Jagjivan Ram in Parliament—A Profile*, सामाजिक–राजनीतिक सशक्तीकरण, शिक्षा और समान अधिकारों वाले समाज की अवधारणा, पृ. 30
17. Ram, Babu Jagjivan; Babu Jagjivan Ram—A Profile, दलितों के अधिकारों के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था के भीतर संघर्ष तथा सामाजिक समरसता संबंधी विचार।
18. Babu Jagjivan Ram National Foundation; Babuji Biography; केंद्रीय विधानमंडल में चार दशकों से अधिक समय तथा केंद्रीय मंत्रिमंडल में दीर्घकालीन सेवा का विवरण।
19. A.P.J. Abdul Kalam Address at the Babu Jagjivan Ram Centenary Lecture, President of India; सामाजिक न्याय और कमजोर वर्गों के उत्थान को राष्ट्रीय विकास से जोड़ने संबंधी वक्तव्य।
20. Ram, Jagjivan (1980); Caste Challenge in India; New Delhi, Vision Books, P-10,44-45